

test

01 January 1990, Monday
01:00:00 AM(5.5)
New Delhi, India

रेखांश : 77.12E
अक्षांश : 28.36N
साम्पातिक काल : 7:19:34
स्थानीय मानक समय : 00:38:48
अयनांश : 23.72 एन सी लाहिरी

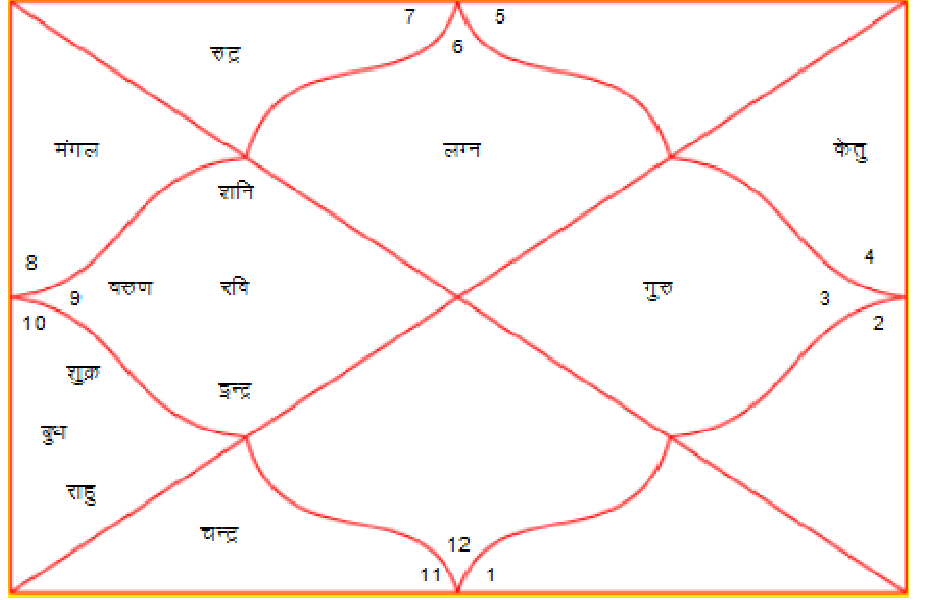
लग्न : कन्या
लग्नपति : बुध
राशी : कुम्भ
राशी स्वामी : शनि
नक्षत्र : धनिष्ठा
नक्षत्र स्वामी : मंगल
चरण : 2

नाड़ी : मध्य
नाड़ी पद : आदि

तिथि : चतुर्थी शुक्ल
पाया : स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग : वज्र

करण : विष्टि
वर्ण : शूद्र
वर्ण : शूद्र
वश्य : जलचर
योनि : सिंह(स्त्री.)
विहग : वायस
गण : राक्षस
प्रथम अक्षर : ग, गी, गू, गे
सूर्य राशि : धनु

लग्न कुण्डली



जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र-पद	स्वामी
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा-1	मंगल
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढा-1	शुक्र
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ-2	रवि
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण-1	चन्द्र
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा-4	शनि
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा-2	राहु
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढा-3	शुक्र
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा-3	मंगल
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा-1	मंगल
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा-3	बुध
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला-4	केतु
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढा-2	शुक्र
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा-2	गुरु

आपके स्वास्थ्य की स्थिति इस साल



अगले बारह महीनों में आपके स्वास्थ्य की स्थिति क्या होगी इसका आंकलन इस रिपोर्ट में ज्योतिष के द्वारा किया गया है। इसमें इस दौरान आपकी कुण्डली में ग्रहों के गोचर व आपके ऊपर दशा-महादशा के प्रभाव को देखा गया है जिसके आधार पर ज्योतिष द्वारा यह बताया गया है कि आने वाले समय आपके स्वास्थ्य के लिये शुभ होगा या अशुभ।

इस रिपोर्ट में आने वाले समय की चुनौतियों व मौकों को पहचान कर सही कार्यवाही करें।



विंशोत्तरी दशा (महादशा)

मंगल

	30 Apr 1986 - 30 Apr 1993
मंगल	30 Apr 1986 - 26 Sep 1986
राहु	26 Sep 1986 - 15 Oct 1987
गुरु	15 Oct 1987 - 20 Sep 1988
शनि	20 Sep 1988 - 30 Oct 1989
बुध	30 Oct 1989 - 27 Oct 1990
केतु	27 Oct 1990 - 25 Mar 1991
शुक्र	25 Mar 1991 - 24 May 1992
रवि	24 May 1992 - 29 Sep 1992
चन्द्र	29 Sep 1992 - 30 Apr 1993

राहु

	30 Apr 1993 - 01 May 2011
राहु	30 Apr 1993 - 11 Jan 1996
गुरु	11 Jan 1996 - 06 Jun 1998
शनि	06 Jun 1998 - 12 Apr 2001
बुध	12 Apr 2001 - 30 Oct 2003
केतु	30 Oct 2003 - 17 Nov 2004
शुक्र	17 Nov 2004 - 18 Nov 2007
रवि	18 Nov 2007 - 11 Oct 2008
चन्द्र	11 Oct 2008 - 12 Apr 2010
मंगल	12 Apr 2010 - 01 May 2011

गुरु

	01 May 2011 - 01 May 2027
गुरु	01 May 2011 - 18 Jun 2013
शनि	18 Jun 2013 - 30 Dec 2015
बुध	30 Dec 2015 - 06 Apr 2018
केतु	06 Apr 2018 - 13 Mar 2019
शुक्र	13 Mar 2019 - 11 Nov 2021
रवि	11 Nov 2021 - 30 Aug 2022
चन्द्र	30 Aug 2022 - 30 Dec 2023
मंगल	30 Dec 2023 - 05 Dec 2024
राहु	05 Dec 2024 - 01 May 2027

शनि

	01 May 2027 - 01 May 2046
शनि	01 May 2027 - 04 May 2030
बुध	04 May 2030 - 11 Jan 2033
केतु	11 Jan 2033 - 20 Feb 2034
शुक्र	20 Feb 2034 - 21 Apr 2037
रवि	21 Apr 2037 - 03 Apr 2038
चन्द्र	03 Apr 2038 - 02 Nov 2039
मंगल	02 Nov 2039 - 11 Dec 2040
राहु	11 Dec 2040 - 18 Oct 2043
गुरु	18 Oct 2043 - 01 May 2046

बुध

	01 May 2046 - 01 May 2063
बुध	01 May 2046 - 26 Sep 2048
केतु	26 Sep 2048 - 23 Sep 2049
शुक्र	23 Sep 2049 - 24 Jul 2052
रवि	24 Jul 2052 - 31 May 2053
चन्द्र	31 May 2053 - 30 Oct 2054
मंगल	30 Oct 2054 - 28 Oct 2055
राहु	28 Oct 2055 - 16 May 2058
गुरु	16 May 2058 - 21 Aug 2060
शनि	21 Aug 2060 - 01 May 2063

केतु

	01 May 2063 - 01 May 2070
केतु	01 May 2063 - 27 Sep 2063
शुक्र	27 Sep 2063 - 26 Nov 2064
रवि	26 Nov 2064 - 03 Apr 2065
चन्द्र	03 Apr 2065 - 02 Nov 2065
मंगल	02 Nov 2065 - 31 Mar 2066
राहु	31 Mar 2066 - 19 Apr 2067
गुरु	19 Apr 2067 - 25 Mar 2068
शनि	25 Mar 2068 - 04 May 2069
बुध	04 May 2069 - 01 May 2070

शुक्र

	01 May 2070 - 01 May 2090
शुक्र	01 May 2070 - 30 Aug 2073
रवि	30 Aug 2073 - 31 Aug 2074
चन्द्र	31 Aug 2074 - 30 Apr 2076
मंगल	30 Apr 2076 - 30 Jun 2077
राहु	30 Jun 2077 - 30 Jun 2080
गुरु	30 Jun 2080 - 01 Mar 2083
शनि	01 Mar 2083 - 01 May 2086
बुध	01 May 2086 - 01 Mar 2089
केतु	01 Mar 2089 - 01 May 2090

रवि

	01 May 2090 - 30 Apr 2096
रवि	01 May 2090 - 18 Aug 2090
चन्द्र	18 Aug 2090 - 17 Feb 2091
मंगल	17 Feb 2091 - 25 Jun 2091
राहु	25 Jun 2091 - 19 May 2092
गुरु	19 May 2092 - 07 Mar 2093
शनि	07 Mar 2093 - 17 Feb 2094
बुध	17 Feb 2094 - 24 Dec 2094
केतु	24 Dec 2094 - 01 May 2095
शुक्र	01 May 2095 - 30 Apr 2096

चन्द्र

	30 Apr 2096 - 02 May 2106
चन्द्र	30 Apr 2096 - 01 Mar 2097
मंगल	01 Mar 2097 - 30 Sep 2097
राहु	30 Sep 2097 - 01 Apr 2099
गुरु	01 Apr 2099 - 01 Aug 2100
शनि	01 Aug 2100 - 02 Mar 2102
बुध	02 Mar 2102 - 02 Aug 2103
केतु	02 Aug 2103 - 02 Mar 2104
शुक्र	02 Mar 2104 - 31 Oct 2105
रवि	31 Oct 2105 - 02 May 2106



विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

गुरु – शुक्र

	13 Mar 2019 - 11 Nov 2021
शुक्र	13 Mar 2019 - 22 Aug 2019
रवि	22 Aug 2019 - 10 Oct 2019
चन्द्र	10 Oct 2019 - 30 Dec 2019
मंगल	30 Dec 2019 - 25 Feb 2020
राहु	25 Feb 2020 - 20 Jul 2020
गुरु	20 Jul 2020 - 27 Nov 2020
शनि	27 Nov 2020 - 30 Apr 2021
बुध	30 Apr 2021 - 15 Sep 2021
केतु	15 Sep 2021 - 11 Nov 2021

गुरु – रवि

	11 Nov 2021 - 30 Aug 2022
रवि	11 Nov 2021 - 26 Nov 2021
चन्द्र	26 Nov 2021 - 20 Dec 2021
मंगल	20 Dec 2021 - 06 Jan 2022
राहु	06 Jan 2022 - 19 Feb 2022
गुरु	19 Feb 2022 - 30 Mar 2022
शनि	30 Mar 2022 - 15 May 2022
बुध	15 May 2022 - 25 Jun 2022
केतु	25 Jun 2022 - 13 Jul 2022
शुक्र	13 Jul 2022 - 30 Aug 2022

गुरु – चन्द्र

	30 Aug 2022 - 30 Dec 2023
चन्द्र	30 Aug 2022 - 10 Oct 2022
मंगल	10 Oct 2022 - 07 Nov 2022
राहु	07 Nov 2022 - 19 Jan 2023
गुरु	19 Jan 2023 - 25 Mar 2023
शनि	25 Mar 2023 - 10 Jun 2023
बुध	10 Jun 2023 - 18 Aug 2023
केतु	18 Aug 2023 - 16 Sep 2023
शुक्र	16 Sep 2023 - 06 Dec 2023
रवि	06 Dec 2023 - 30 Dec 2023

गुरु – मंगल

	30 Dec 2023 - 05 Dec 2024
मंगल	30 Dec 2023 - 19 Jan 2024
राहु	19 Jan 2024 - 10 Mar 2024
गुरु	10 Mar 2024 - 25 Apr 2024
शनि	25 Apr 2024 - 18 Jun 2024
बुध	18 Jun 2024 - 05 Aug 2024
केतु	05 Aug 2024 - 25 Aug 2024
शुक्र	25 Aug 2024 - 21 Oct 2024
रवि	21 Oct 2024 - 07 Nov 2024
चन्द्र	07 Nov 2024 - 05 Dec 2024

गुरु – राहु

	05 Dec 2024 - 01 May 2027
राहु	05 Dec 2024 - 16 Apr 2025
गुरु	16 Apr 2025 - 11 Aug 2025
शनि	11 Aug 2025 - 27 Dec 2025
बुध	27 Dec 2025 - 30 Apr 2026
केतु	30 Apr 2026 - 21 Jun 2026
शुक्र	21 Jun 2026 - 14 Nov 2026
रवि	14 Nov 2026 - 28 Dec 2026
चन्द्र	28 Dec 2026 - 11 Mar 2027
मंगल	11 Mar 2027 - 01 May 2027

शनि – शनि

	01 May 2027 - 04 May 2030
शनि	01 May 2027 - 22 Oct 2027
बुध	22 Oct 2027 - 25 Mar 2028
केतु	25 Mar 2028 - 28 May 2028
शुक्र	28 May 2028 - 28 Nov 2028
रवि	28 Nov 2028 - 22 Jan 2029
चन्द्र	22 Jan 2029 - 23 Apr 2029
मंगल	23 Apr 2029 - 26 Jun 2029
राहु	26 Jun 2029 - 08 Dec 2029
गुरु	08 Dec 2029 - 04 May 2030

शनि – बुध

	04 May 2030 - 11 Jan 2033
बुध	04 May 2030 - 20 Sep 2030
केतु	20 Sep 2030 - 16 Nov 2030
शुक्र	16 Nov 2030 - 29 Apr 2031
रवि	29 Apr 2031 - 17 Jun 2031
चन्द्र	17 Jun 2031 - 07 Sep 2031
मंगल	07 Sep 2031 - 03 Nov 2031
राहु	03 Nov 2031 - 30 Mar 2032
गुरु	30 Mar 2032 - 08 Aug 2032
शनि	08 Aug 2032 - 11 Jan 2033

शनि – केतु

	11 Jan 2033 - 20 Feb 2034
केतु	11 Jan 2033 - 03 Feb 2033
शुक्र	03 Feb 2033 - 12 Apr 2033
रवि	12 Apr 2033 - 02 May 2033
चन्द्र	02 May 2033 - 05 Jun 2033
मंगल	05 Jun 2033 - 28 Jun 2033
राहु	28 Jun 2033 - 28 Aug 2033
गुरु	28 Aug 2033 - 21 Oct 2033
शनि	21 Oct 2033 - 24 Dec 2033
बुध	24 Dec 2033 - 20 Feb 2034

शनि – शुक्र

	20 Feb 2034 - 21 Apr 2037
शुक्र	20 Feb 2034 - 31 Aug 2034
रवि	31 Aug 2034 - 28 Oct 2034
चन्द्र	28 Oct 2034 - 02 Feb 2035
मंगल	02 Feb 2035 - 10 Apr 2035
राहु	10 Apr 2035 - 30 Sep 2035
गुरु	30 Sep 2035 - 03 Mar 2036
शनि	03 Mar 2036 - 02 Sep 2036
बुध	02 Sep 2036 - 13 Feb 2037
केतु	13 Feb 2037 - 21 Apr 2037



इस साल आपके स्वास्थ्य की स्थिति

जीवन में सभी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से होकर कभी ना कभी गुजरना ही पड़ता है। किसी व्यक्ति को अधिक तो किसी को कम परेशानियाँ होती हैं। कई व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं। लेकिन उन्हें कई बार अत्यधिक मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इससे धीरे-धीरे उनका मनोबल टूटने लगता है और इसका सीधा प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर देखा गया है। सभी व्यक्ति स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। वैदिक ज्योतिष आपको स्वस्थ शरीर के साथ बीमारियों से मुकाबला करने में सहायता कर सकता है। इसके द्वारा आप जान सकते हैं कि आप किस रूप में कमजोर हैं और कहां मजबूत। अपनी कमजोरियों के प्रति सावधान रहकर और शक्तियों का इस्तेमाल कर आप ज्यादा से ज्यादा स्वस्थ और लंबे जीवन का आनंद उठा सकते हैं।

ग्रहों की दशा का स्वास्थ्य पर प्रभाव

महादशा : गुरु

01 May 2011 - 01 May 2027

दिये गये समय में आप गुरु महादशा के प्रभाव में रहेंगे। गुरु आपकी जन्मपत्री में कमजोर अवस्था में है अतः इन दिनों आपको गैस्ट्रिक की परेशानी का समना करना पड़ सकता है। संभावना है कि कानों में तकलीफ होने के कारण आपको चिकित्सक से परामर्श लेना पड़ सकता है। शर्करा युक्त पदार्थों के सेवन से परहेज रखना चाहिए यह मधुमेह से बचाव के लिए अच्छा रहेगा। अपनी सेहत पर आपको ध्यान देना होगा अन्यथा दुबले हो सकते हैं।

अन्तर दशा : गुरु-शुक्र

13 March 2019 - 11 November 2021

इन दिनों आप गुरु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के प्रभाव में रहेंगे। स्वास्थ्य के विषयों में गुरु का शुभ प्रभाव मिलने से आपकी सेहत अच्छी रहेगी। कोई भी रोग आपको जल्दी प्रभावित नहीं कर पाएगा। लेकिन, आशंका है कि मानसिक तौर पर आप परेशान रह सकते हैं। अगर चिंताओं एवं उलझनों को अपने ऊपर हावी होने देंगे तो इसका असर स्वास्थ्य पर हो सकता है।

प्रत्यन्तर दशा : गुरु-शुक्र-मंगल

30 December 2019 - 25 February 2020

आपकी कुण्डली में इस समय मंगल की प्रत्यन्तर दशा चल रही है। मंगल आपकी कुण्डली में बली अवस्था में स्थित है। मंगल के बली होने से आप इस समयावधि में स्वस्थ रहेंगे। आपके भीतर जोश तथा ऊर्जा भरपूर रहेगी। आप ऊर्जा से भरे रहेंगे। साहसी तथा पराक्रमी होंगे।

इस समयावधि में मंगल के कारकों से संबंधित रोग आपको परेशान नहीं करेंगे। जैसे कटना, जलना, पित्त विकार आदि समस्याएं आपसे दूर ही रहेंगी। रक्तचाप दुरुस्त रहेगा। आपको कभी-कभी क्रोध अधिक आ सकता है, उससे आपको बचना चाहिए। तेज गति से वाहन चलाने से बचें।

प्रत्यन्तर दशा : गुरु-शुक्र-राहु



25 February 2020 - 20 July 2020

आपकी कुण्डली में इस समय राहु की प्रत्यन्तर दशा चल रही है. राहु आपकी कुण्डली में बली अवस्था में स्थित है. राहु के बली होने पर आपको स्वास्थ्य संबंधी शारीरिक परेशानियों का सामना कम करना पड़ेगा. आपके भीतर चुस्ती-फुर्ती बनी रहेगी. राहु आपकी कुण्डली में भले ही बली अवस्था में स्थित है. लेकिन राहु की इस समयावधि में आपको अकारण मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है . आपके समक्ष भ्रम की स्थिति बनी रह सकती है.

प्रत्यन्तर दशा : गुरु-शुक्र-गुरु

20 July 2020 - 27 November 2020

आपकी कुण्डली में इस समय गुरु की प्रत्यन्तर दशा चल रही है. गुरु आपकी कुण्डली में निर्बल अवस्था में स्थित है. गुरु के निर्बल होने से आपका स्वास्थ्य इस समय प्रभावित रहने की संभावना बनती है. आपको डायबिटीज की शिकायत हो सकती है. आपको अधिक भोजन करने से बचना चाहिए. बदहजमी की शिकायत हो सकती है. मानसिक परेशानी से बचें, मधुमेह की संभावना बन सकती है. आपको इस समय वायु विकार संबंधी परेशानियां हो सकती है. गैस बनने से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है.

चक्कर आना, गाल ब्लैडर संबंधी परेशानी, पेट से जुड़े रोग, कफ संबंधी रोग, स्पलीन अर्थात तिल्ली से जुड़े रोग, कर्ण रोग, शरीर में चरबी बढ़ना, हर्निया जैसे रोग हो सकते हैं.

प्रत्यन्तर दशा : गुरु-शुक्र-शनि

27 November 2020 - 30 April 2021

आपकी कुण्डली में इस समय शनि की प्रत्यन्तर दशा चल रही है. शनि आपकी कुण्डली में बली अवस्था में स्थित है. इस समय स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. आप आलस्य का त्याग कर चुस्ती से कार्यों का निपटारा करेंगे. आप वात विकारों से बचे रहेंगे. हड्डियों से संबंधित परेशानियों से राहत मिली रहेगी. पैरों के रोग इस समय ठीक हो जाएंगे. नाडीतंत्र सुचारु रूप से काम करेगा.

ग्रहों के गोचर का आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव

द्वादश भाव स्वामी सूर्य लग्न में

17 September 2020 - 18 Oct 2020

द्वादश भाव के स्वामी सूर्य का गोचर इस समय आपकी कुण्डली में लग्न भाव से हो रहा है. सूर्य के इस गोचर से आपको हड्डियों से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है. स्वास्थ्य लाभ पाने के लिए चिकित्सक से परामर्श करना पड़ सकता है. रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी एवं बुखार भी इन दिनों होने की संभावना है. बालों का झड़ना तेज हो सकता है. आपके लिए सलाह है कि अपनी सेहत का ध्यान रखें और जरूरत होने पर चिकित्सक के दिशा निर्देश के अनुसार दवाईयां लें.

बेहतर स्वास्थ्य के लिये उपाय

वैदिक ज्योतिष में दिए गये उपायों को कर आप अपनी कुण्डली की ग्रहबाधाओं को कम कर सकते हैं जिससे आपके स्वास्थ्य को बल मिल सकता है. इन उपायों को पूरी श्रद्धा व विधिपूर्वक करें. अगर आप



कोई दवा ले रहें हो या आपका उपचार चल रहा हो तो उसे भी चालू रखें. ज्योतिष के उपाय आपके कर्म को बल देते हैं, उनका विकल्प नहीं है.

सूर्य के लिये उपाय

(२) सूर्य संबंधी बीमारियों के निवारण के लिए आप सूर्य का आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ कर सकते हैं . यह पाठ प्रतिदिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध आसन पर बैठकर करना चाहिए. पाठ करते समय आपका मुँह पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए. आप सूर्य से संबंधित किसी भी पाठ या जप को करते हैं तो शुक्ल पक्ष के रविवार से आरम्भ करें. सूर्योदय के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर आप कोई भी जप या पाठ कर सकते हैं.

(३) इसके अतिरिक्त आप सूर्य के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. इस वैदिक मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन सुबह के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर करने से आपको लाभ मिलेगा. आप एक माला प्रतिदिन तीन माह तक जप करें तो स्वयं परिवर्तन का अनुभव करेंगे। मंत्र है :-
 " ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्म मतं मर्त्यं च । हिरण्येन सवितारथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् । सूर्याय नमः । "

(४) आप प्रतिदिन सूर्य को जल अर्पित करें. जल अर्पित करते समय " ॐ घृणि सूर्याय नमः " बोले. तत्पश्चात् सूर्य मंत्र " ॐ घृणिः सूर्यादित्योम " की एक माला जप करें. प्रतिदिन सुबह इस मंत्र का जप करने से आपकी बुद्धि, शारीरिक बल तथा मानसिक बल में वृद्धि होगी.

(५) आप सूर्य से संबंधित नवग्रह स्तोत्र में से सूर्य के मंत्र का जप कर सकते हैं. इस मंत्र का जप आप सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर करें. जप को आप शुक्ल पक्ष के रविवार से आरम्भ करें. मंत्र है :-
 " जपाकुसुम संकाशं काशपेयं महाद्युतिम । तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम ।। " इस मंत्र की एक माला जप प्रतिदिन सुबह के समय करें। सूर्य के अशुभ प्रभाव इससे दूर होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी.

(६) सूर्य पिता व पिता समान व्यक्ति का कारक ग्रह होता है. इसलिए सूर्य के मंत्र जप के अतिरिक्त आप इनका आदर तथा मान-सम्मान करें. इससे सूर्य के अशुभ प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी. सूर्य प्रशासक अथवा उच्चाधिकारियों का भी कारक ग्रह होता है, इसलिए आप अपने उच्चाधिकारियों को अपने कार्य से संतुष्ट तथा खुश रखने की कोशिश करें.

(७) सूर्य देव को प्रसन्न करने के लिए आप विष्णु भगवान का पूजन रविवार के दिन करें. आप हरिवंश पुराण का पाठ भी रविवार के दिन करें. सूर्य मान-सम्मान का कारक ग्रह है. आप अपने मान-सम्मान में वृद्धि के लिए शुक्ल पक्ष के रविवार से व्रत आरम्भ कर सकते हैं अथवा आप रविवार के दिन नमक का त्याग करें. रविवार को आप भोजन में केवल मीठी चीजों का प्रयोग करें. नमक बिलकुल भी नहीं खाएं.

आप उपरोक्त उपाय में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय अपना सकते हैं.

बुध के लिये उपाय



(२) बुध के शुभ फलों में वृद्धि करने के लिए आप बुध से सम्बंधित मंत्रों का जप कर सकते हैं. बुध मंत्र का जप शुक्ल पक्ष के बुधवार से आरम्भ करें. जप आरम्भ करने से पहले स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिए. स्वच्छ आसन पर बैठकर अपना मुँह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर करके मंत्र जप करें. बुध के पौराणिक मंत्र का आप जप कर सकते हैं. इस जप को करने से बुध ग्रह को बल मिलेगा. बुध से संबंधित विकारों में कमी आएगी. बुध का पौराणिक मंत्र है :- " प्रियंगुकलिका श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम ॥ "

(३) आप बुध के वैदिक मंत्र का जप करें. बुध के वैदिक मंत्र का जप करने से बुध के अशुभ प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी. बुध के इस मंत्र का जप आप प्रतिदिन एक माला सुबह अथवा संध्या समय में कर सकते हैं. स्वच्छ वस्त्र धारण करके स्वच्छ आसन पर बैठकर आप मंत्र जप करें। बुध का वैदिक मंत्र है :-

"ॐ उदबुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्ते सः ॐ सृजेथामयं च । अस्मिन्सधस्थोयुत्तरस्मिन् विश्वे देवा यतमानश्च सीदत । बुधाय नमः"

(४) बुध के शुभ फल वृद्धि हेतु बुधवार के दिन व्रत रखकर गणेश जी की पूजा अर्चना कर सकते हैं. संध्या समय में भोजन करने से पहले गणेश जी के मंत्र का जप करें, मंत्र है :- "ॐ गं गणपतये नमः "

(५) बुध ग्रह से मामा, मौसी, बुआ आदि का विचार किया जाता है. इन्हें उचित मान-सम्मान दें. उनकी अवहेलना, अपमान या उपेक्षा नहीं करें. इनके प्रति अच्छे व्यवहार से बुध के शुभ फलों में वृद्धि होगी.

आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार किसी एक का अनुसरण श्रद्धा और भक्ति से करें.

शुक्र के लिये उपाय

(२) आप शुक्र के अशुभ फल को कम करने तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए "शुक्र स्तोत्र" का जप कर सकते हैं. स्तोत्र का पाठ करने से शुक्र से सम्बंधित जो भी अशुभ फल मिलने की संभावना है उसमें कमी आ सकती है. शुक्र के किसी भी मंत्र अथवा पाठ का आरम्भ शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले शुक्रवार से करना चाहिए. पाठ या जप करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण करें एवं स्वच्छ आसन पर बैठें. इस क्रिया के दौरान मुख पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर रहना चाहिए.

(३) शुक्रवार के दिन आपको शुक्र के पौराणिक मंत्र का जप करना चाहिए. मंत्र का जप एक माला प्रतिदिन स्नान आदि से निवृत्त होकर करें. इससे स्वास्थ्य लाभ मिलेगा. शुक्र संबंधी विकारों में कमी आएगी. शुक्र का पौराणिक मंत्र है :-

" हिमकुन्द मृणालार्भं दैत्यानां परमं गुरुम । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम ॥ "

(४) आप शुक्रवार के दिन शुक्र के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. शुक्रवार के दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिए. स्वच्छ आसन अथवा कम्बल पर बैठकर प्रतिदिन एक माला का जप करें. जप करते समय आपका मुख उत्तर दिशा अथवा पूर्व दिशा की ओर



होना चाहिए. शुक्र का वैदिक मंत्र है :-

“ॐ अन्नात्सरिस्रतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत क्षत्रं पयः सोमं प्रजपतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपातं शुक्र मधसेइन्द्रस्येन्द्रिमिदं पयोमृतं मधु ॥ शुक्राय नमः”

(५) शुक्रवार के दिन व्रत रखें. संतोषी माता अथवा लक्ष्मी जी की पूजा, आराधना करें. व्रत रखने के बाद संध्या समय में विधिवत तरीके से पूजन करें और कथा सुनें या कथा स्वयं पढ़ें. व्रत करने से पहले आप संकल्प करें कि कितने समय तक आपको व्रत करना है. आप अपनी सुविधानुसार व्रत की संख्या चुन सकते हैं. शुक्रवार के दिन खीर बनाकर गरीब व्यक्तियों में बाँटें. एक आँख के व्यक्ति को शुक्रवार के दिन भोजन कराएं. इससे शुक्र के शुभ फलों में बढ़ोतरी होगी।

(६) शुक्र ग्रह से जीवनसाथी का विचार किया जाता है. आपको अपने जीवनसाथी को खुश तथा हर प्रकार से संतुष्ट रखना चाहिए. उनकी भावनाओं को सम्मान दें और स्नेह एवं सहयोग बनाये रखें. इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव में कमी आएगी.

अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार इन उपायों में से कोई भी उपाय आप कर सकते हैं.

मंगल के लिये उपाय

(२) मंगल के शुभ फलों को बढ़ाने के लिए आपको मंगल ग्रह से संबंधित मंत्रों का जप करना चाहिए. मंगल से संबंधित मंत्रों का जप अथवा पाठ आप शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले मंगलवार से आरम्भ करें. आप मंगल के शुभ फलों में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ प्रतिदिन संध्या समय में कर सकते हैं. इससे मंगल के अशुभ प्रभावों में कमी आएगी.

(३) आप मंगल ग्रह के पौराणिक मंत्र का जप भी कर सकते हैं. इस मंत्र का एक माला जप आपको प्रतिदिन संध्या समय में करना चाहिए. मंगल का पौराणिक मंत्र है :- “धरणीगर्भ संभूतम विद्युत्कांति समप्रभम । कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम ॥ ”
इस मंत्र से मंगल से संबंधित दोषों में कमी आएगी।

(४) मंगल के वैदिक मंत्र का जप कर सकते हैं. इस मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन करें. इससे मंगल के दुष्प्रभाव कम होंगे और शुभ फलों में वृद्धि होगी. इस मंत्र का जप संध्या समय में करना चाहिए. मंगल का वैदिक मंत्र है :-

“ ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्योयम । अपामरेतांसि जिन्वति । भौमाय नमः ”

(५) मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको मंगलवार के दिन व्रत रखना चाहिए. व्रत रखकर संध्या समय में हनुमान जी की पूजा-अर्चना करें. संध्या समय में मंगलवार के दिन हनुमान जी को प्रसाद अर्पित करें तथा प्रसाद को छोटे बच्चों में बाँटें. शाम को भोजन में नमक का त्याग करें. मीठी खाएं.

(६) मंगल ग्रह से छोटे भाई-बहनों का विचार किया जाता है. आपके सहयोगी जो आपके अन्तर्गत कार्य करते हैं, उनका विचार भी मंगल से किया जाता है. मंगल के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए अपने छोटे



भाई—बहनों तथा सहयोगियों से मधुरता से पेश आना चाहिए.

मंगल के इन उपायों में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय आप सकते हैं.

बृहस्पति के लिये उपाय

(२) बृहस्पति ग्रह से शुभ फल पाने के लिए बृहस्पतिवार के दिन विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद होगा. इस पाठ का आरम्भ अथवा अन्य किसी जप का आरम्भ आपको शुक्ल पक्ष के पश्चात आने वाले बृहस्पतिवार से करना चाहिए. पाठ या जप करने से पहले अपने आपको शुद्ध कर लें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें. पाठ के समय मुंह पूर्व अथवा उत्तर दिशा में होना चाहिए. बैठने के लिए कुशा का आसन अथवा कम्बल प्रयोग कर सकते हैं.

(३) आप बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि के लिए गुरु के पौराणिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र के जप की एक माला प्रतिदिन सुबह के समय करें. इससे गुरु से संबंधित विकारों में कमी आएगी। गुरु के शुभ फलों में वृद्धि होगी। गुरु का पौराणिक मंत्र है :-
" देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥"

(४) आप बृहस्पति के वैदिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र का जप आप प्रतिदिन सुबह के समय एक माला करें इससे स्वास्थ्य को अनुकूल रखने में बृहस्पति का योगदान प्राप्त होगा. मंत्र का जप स्वच्छ वस्त्र धारण करके, स्वच्छ आसन पर बैठकर करना चाहिए. गुरु का वैदिक मंत्र है :-
" ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हादद्युमद्विभाति क्रषुतनेन्त यद्दी यद्दवसेश्रत प्रजातमदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ बृहस्पतये नमः"
एक वर्ष तक इस मंत्र का जप करने से ज्ञान की वृद्धि होगी.

(५) आप बृहस्पतिवार के दिन व्रत रखें। उस दिन पीले वस्त्र धारण करें। सुबह के समय स्नान आदि से निवृत्त होकर केले के वृक्ष की जड़ में जल दें और गुड़—चना व शुद्ध घी के दीपक से पूजन करें. संध्या समय में आप भोजन में चने या बेसन से बनी खाने की चीजें खाएं. भोजन में नकम का त्याग करें.

(६) गुरु ग्रह से परिवार के बड़े व्यक्तियों तथा गुरुजनों का विचार किया जाता है. आप अपने परिवार के सम्मानित व्यक्तियों और अपने गुरुजनों का आदर करें. उन्हें सम्मान तथा सत्कार दें. अपनी सेवा से उन्हें प्रसन्न रखें और स्नेहपूर्ण संबंध बनाये रखें. इनसे गुरु के शुभ फलों में वृद्धि होगी. गुरु संबंधी विकारों में कमी आएगी.

आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार कोई भी उपाय अपना सकते हैं.

शनि के लिये उपाय

(२) शनि के शुभ फलों में वृद्धि के लिए प्रत्येक शनिवार को संध्या समय में "शनि नील स्तोत्र " अथवा " दशरथ कृत शनि स्तोत्र " का पाठ करना लाभप्रद होगा. इस पाठ से शनि के प्रभाव से होने वाले रोगों में कमी आएगी. मंत्र जप अथवा पाठ, शुक्ल पक्ष के बाद आने वाले शनिवार से आरम्भ करना



चाहिए. संध्या समय में स्वच्छ आसन पर बैठें. इस क्रम में अपना मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर रखें. इसके बाद एक माला शनि मंत्र का जप करना चाहिए.

(३) शनिवार के दिन संध्या समय में शनि के पौराणिक मंत्र का जप करें. इस मंत्र का जप करने से शनि के शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा शनि के दुष्प्रभाव में कमी आएगी. शनि का पौराणिक मंत्र है :-
“नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम । छाया मार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम ॥ ”

(४) शनि ग्रह के शुभ फलों को बढ़ाने के लिए आप शनि के वैदिक मंत्र का जप जप सकते हैं. इस मंत्र का जप प्रतिदिन एक माला संध्या समय में करना अच्छा रहेगा. इससे शनि के प्रभाव से होने वाली बीमारियों में कमी आएगी.

“ ॐ शन्नो देवि रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्न्यो रभिस्त्रवन्तु नः ॥ शनैश्चराय नमः ।”

(५) शनिवार के दिन व्रत रख सकते हैं. इससे शनि के प्रभाव से होने वाले रोगों से मुक्ति मिल सकती है. व्रत करने के पश्चात संध्या समय में विधिवत तरीके से कथा पढ़ें तथा पूजन करें. पूजा के उपरान्त काली उड़द की दाल से बनी खिचड़ी का भोजन करें. शनिवार के दिन किसी लंगड़े व्यक्ति को भोजन कराएं. शनिवार के दिन खिचड़ी बनाकर गरीब व्यक्तियों में वितरित करा सकते हैं.

(६) शनिवार के दिन हनुमान जी की पूजा करना भी आपके लिए लाभप्रद हो सकता है. इससे आप स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

(७) शनि घर के वृद्ध तथा बुजुर्ग व्यक्ति, नौकर, गरीब व्यक्ति और कार्यालय में आपके अधीनस्थ कार्य करने वाले कर्मचारियों का कारक ग्रह है. आपको इन सभी के प्रति स्नेह तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए. इनके प्रति अच्छा व्यवहार शनि के कष्टकारी प्रभाव में कमी ला सकता है.

शनि ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय आजमा सकते हैं.

चंद्रमा के लिये उपाय

(२) आप चन्द्रमा से संबंधित रोगों से निजात पाने के लिए चन्द्रमा के मंत्र का जप करें. चन्द्रमा के किसी भी पाठ अथवा मंत्र का जप आप शुक्ल पक्ष के सोमवार से अथवा पूर्णिमा से आरम्भ करें. जप या पाठ सोमवार को सांयकाल में शुद्ध वस्त्र धारण करने के बाद स्वच्छ आसन पर बैठकर करना चाहिए. आपका मुँह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए. चन्द्रमा का वैदिक मंत्र है :-

“ ॐ इमं देवा, असपत्न सुवंगं, बध्व महते, क्षत्राय महते, ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्रियेन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै विशेषेण वोसी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानां ॐ राजा । चन्द्राय नमः ।”

चन्द्रमा के इस मंत्र का जप प्रतिदिन संध्या समय एक माला करें. चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि होगी.

(३) चन्द्रमा के नमस्कार मंत्र का जप भी आपके लिए बहुत लाभदायक रहेगा. इससे चन्द्रमा के अशुभ



प्रभाव में वृद्धि होगी. चन्द्रमा का नमस्कार मंत्र है :- “ दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदारणव संभवम । नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम ।। ”

(४) चन्द्रमा के शुभ प्रभाव में वृद्धि के लिए प्रत्येक मास की पूर्णिमा को आप व्रत रखकर सत्यनारायण भगवान की पूजा कर सकते हैं. इससे चन्द्रमा को बल मिलेगा जिससे अशुभ प्रभाव कम होगा. चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि होगी. प्रत्येक सोमवार को शिव भगवान की पूजा करने से भी चन्द्रमा के शुभ फलों में बढ़ोतरी होगी ।

(५) चन्द्रमा से माता अथवा माता समान स्त्री का विचार किया जाता है. आप अपनी माता का आदर करें तथा उनके मान-सम्मान को ठेस ना पहुंचाएं. अपनी माता और माता समान स्त्रियों को आदर दें. माता का आदर करने से चन्द्रमा के दोषों में कमी आएगी तथा शुभ फल में वृद्धि होगी.

आप उपरोक्त उपायों में से अपनी सुविधानुसार किसी एक उपाय को अपना सकते हैं.

राहु के लिये उपाय

(२) राहु के मंत्र का जप शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद करना चाहिए. शनिवार को सूर्यास्त के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें. स्वच्छ आसन पर उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें और राहु के पौराणिक मंत्र का जप करें. इससे राहु से होने वाली व्याधि से राहत मिलेगी. राहु का पौराणिक मंत्र है :-

“अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम । सिंहिका गर्भं संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम ।। ”

(३) राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए वैदिक मंत्र का भी जप कर सकते हैं. शनिवार को सूर्यास्त के बाद प्रतिदिन एक माला जप करें. राहु का वैदिक मंत्र है :-

“ ऊँ कयानश्चित्रेआभुवदूती सदावृधः सखा । कयाश्चिष्टया वृता । राहवे नमः ।

(४) राहु से गरीब एवं दुर्बल व्यक्तियों का विचार किया जाता है. आपको अपनी क्षमतानुसार इन सभी लोगों की सहायता करनी चाहिए. कुष्ठरोगियों के आश्रम में जाकर उनकी आवश्यकता की वस्तुओं का वितरण करें. रोगी तथा पीडाग्रस्त व्यक्ति की सेवा करें. इससे राहु के दुष्परिणामों में कमी आएगी. राहु ग्रह दादा, दादी का भी कारक है. अपने दादा-दादी की सेवा एवं सम्मान करें। इससे भी राहु ग्रह के शुभ प्रभाव में वृद्धि होगी.

राहु ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय आजमा सकते हैं.

केतु के लिये उपाय

(२) केतु के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आप केतु के पौराणिक मंत्र का जप कर सकते हैं. केतु के मंत्र का एक माला जप मंगलवार अथवा शनिवार की रात्रि में सूर्यास्त के पश्चात करें. स्वच्छ वस्त्र धारण करें तथा स्वच्छ आसन पर बैठकर उत्तर अथवा पूर्व की ओर मुख करके जप करना चाहिए. इस मंत्र के जप से केतु से होने वाले शारीरिक कष्टों में कमी आएगी. केतु का पौराणिक मंत्र है :-

“ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम ।। ”



(३) केतु के शुभ फल हेतु शनिवार अथवा मंगलवार के दिन सूर्यास्त के पश्चात केतु के वैदिक मंत्र का भी जप किया जा सकता है. केतु का मंत्र है:- " ॐ केतुं कृष्णन् केतवे मर्यापेशसे समुषदिरजार्यथा । केतवे नमः ॥ "

प्रतिदिन इस मंत्र का एक माला जप आपके लिए लाभप्रद होगा. इसके अतिरिक्त केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए आप गजेन्द्र मोक्ष का पाठ कर सकते हैं.

(४) दुर्बल, दीन, दुःखी तथा अभावग्रस्त युवक तथा युवतियों का कारक ग्रह केतु है. इनकी सहायता करने से केतु के दुष्परिणामों में कमी आ सकती है. परिवार में नाना-नानी का कारक ग्रह भी केतु है. आपको इनका निरादर नहीं करना चाहिए. इन्हें मान-सम्मान दें और इनकी सेवा करें. इससे केतु के शुभ फलों में वृद्धि होगी.

केतु ग्रह के इन उपायों में से अपनी सुविधा एवं श्रद्धानुसार आप कोई भी उपाय कर सकते हैं.

महामृत्युंजय मंत्र

किसी भी प्रकार का शारीरिक कष्ट हो उससे जल्दी राहत पाने के लिए प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढ़ाना और महामृत्युंजय मंत्र का जप करना लाभप्रद होता है. इससे असाध्य तथा कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है. प्रतिदिन श्रद्धा तथा भक्तिपूर्वक एक माला सुबह अथवा शाम में महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए.

" ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ "

रोग नाश के लिए मंत्र
रोगानशेषान पहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान
त्वमाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता हयाश्रयतां प्रयान्ति ।

स्नानादि से निवृत्त होकर प्रतिदिन इस मंत्र का तीन माला जप करने से रोग से जल्दी मुक्ति मिलती है. इस मंत्र जप से रोग से बचाव भी होता है.

नारद पुराण में रोग तथा शोक से मुक्ति पाने के लिए कुछ मंत्र दिए गए हैं. आप इन मंत्र में से किसी भी मंत्र का जप सुबह के समय स्नानादि से निवृत्त होकर शुभ घड़ी में आरम्भ कर सकते हैं. इससे शारीरिक कष्टों से राहत मिलेगी. प्रतिदिन एक माला जप करें. मंत्र हैं :-

(२) " ॐ नमो नारायणाय "

(३) " ॐ नमो भगवते वासुदेवाय "

(४) " श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा "